International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(IV), January - March, 2024, pp. 103-110

आध्यात्मिक पर्यटन के परिप्रेक्ष्य में आतिथ्य उद्योग की भूमिका (राजस्थान क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

महेंद्र कुमार वर्मा*
डॉ. अर्चना तिवारी**

सार

पुरातन काल से भारत आध्यात्मिकता का प्रमुख केंद्र रहा है। यहां प्रतिवर्ष कई विदेशी पर्यटक आध्यात्मिक शांति, आत्म खोज के लिए आते हैं। जिनमें विभिन्न धर्म व क्षेत्र के पर्यटक सम्मिलित होते हैं। विदेशी पर्यटकों के साथ–साथ घरेलू पर्यटक भी आस्था, विश्वास व आध्यात्मिकता के लिए देशभर में भ्रमण करते हैं। आध्यात्मिक पर्यटन किसी धर्म विशेष से संबंधित ना होकर समस्त धर्मो का समन्वय है। इस पर्यटन में व्यक्ति आत्म शोधन व आत्म परिष्कार के लिए यात्रा करता है। दुनिया भर में यात्रियों की संख्या के साथ–साथ आध्यात्मिक पर्यटन का महत्व बढ़ गया है। आध्यात्मिक पर्यटन आध्यात्मिक कारणों से यात्रा करने का अभ्यास है जो कि एक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संसाधनों में वृद्धि को दर्शाता है। राजस्थान सभी आध्यात्मिक संरचनाओं का एक संग्रह है। यहाँ आने वाले यात्रियों को तीर्थ यात्रा के दौरान यहां की लोक संस्कृति व लोक देवताओं के बारे में अवश्य जानना व समझना चाहिए। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कोटा, बूंदी, पुष्कर, अजमेर, अलवर, बीकानेर व डूंगरपुर में हिंदू रीति–रिवाजों और संस्कृतियों का विकास हुआ है। राजस्थान एक शानदार राज्य है जो की अपने गोरवशाली इतिहास, भव्य वास्तुकला और अपनी गजब की आतिथ्य सत्कार की परम्पराओं के साथ विश्व के 17वें सबसे बड़े मरुस्थल के साथ दुनिया भर के पर्यटकों का स्वागत करता है। "पधारो मारे देश" से आतिथ्य सत्कार करने वाला राजस्थान अब पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नया प्रयास कर रहा है। पर्यटन राजस्थान की अर्थव्यवस्था में 20: से भी अधिक योगदान देता है। भारत आने वाला हर तीसरा विदेशी पर्यटक राजस्थान की यात्रा करता है क्योंकि यह स्वर्ण त्रिभुज का हिस्सा है। राजस्थान में लगभग हर बड़े "हॉस्पिटैलिटी ब्रांड" की मौजूदगी है। इसके देशी व विदेशी सभी तरह के ब्रांड शामिल है। इस शोध पत्र में यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है कि आध्यात्मिक पर्यटन सामाजिक – आर्थिक विकास में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

शब्दकोश: *आध्यात्मिक पर्यटन, आध्यात्मिकता, आतिथ्य सत्कार, अर्थव्यवस्था, सामाजिक – आर्थिक विकास।*

प्रस्तावना

विश्व के विभिन्न उद्योगों में पर्यटन उद्योग अपनी एक अलग पहचान रखता है। विश्व यात्रा परिषद व पर्यटन परिषद के अनुसार पर्यटन और यात्रा वैश्विक स्तर पर तेजी से बढ़ता उद्योग बन गया है। प्रकृति, वरीयता और उद्देश्यों के आधार पर पर्यटन को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें हम सांस्कृतिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, पारिस्थितिक पर्यटन,पर्यावरण पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन, मनोरंजन पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, तीर्थ पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, व्यापार पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, फिल्म पर्यटन प्रकृति

* सहायक आचार्य – व्यावसायिक प्रशासन, श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, किशनगढ़, राजस्थान।
** शोध पर्यवेक्षक, सहायक आचार्य – व्यावसायिक प्रशासन, स.पृ.चौ. राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

पर्यटन, साहसिक पर्यटन, कृषि पर्यटन व खेल पर्यटन को सम्मिलित कर सकते हैं। पर्यटन उद्योग रोजगार का प्रमुख जरिया भी है, इससे जुड़े प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कई सेवा उद्योगों में बहुत से लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। समाजशास्त्र, व्यापार अनुसंधान तथा सेवा वितरण के क्षेत्र में आध्यात्मिक पर्यटन की अवधारणा को मजबूती प्रदान की है क्योंकि कोई भी पर्यटक एक देश से दूसरे देश में भ्रमण हेतु जाता है, तो व्यापार व रोजगार के साथ–साथ विदेशी मुद्रा भी लेकर जाता है। विदेशी मुद्रा का महत्व विकासशील देशों के लिए राष्ट्र जीवन रक्षक के समान होता है।

पुरातन काल से भारत आध्यात्मिकता का प्रमुख केंद्र रहा है। यहां प्रतिवर्ष कई विदेशी पर्यटक आध्यात्मिक शांति, आत्म खोज के लिए आते हैं। जिनमें विभिन्न धर्म व क्षेत्र के पर्यटक सम्मिलित होते हैं। विदेशी पर्यटकों के साथ–साथ घरेलू पर्यटक भी आस्था, विश्वास व आध्यात्मिकता के लिए देशभर में भ्रमण करते हैं। (रणनीतिक पहल और सरकारी सलाहकार दल अप्रैल 2012) पर्यटन के साथ–साथ वर्तमान समय में अध्यात्म की ओर लोगों का ध्यान जाने से सेवा उद्योग में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए है। पर्यटन उद्योग को आध्यात्मिकता की अवधारणा ने प्रभावित किया है, क्योंकि इनसे जुड़े रणनीतिकारों ने इसे वास्तविक उत्पाद के रूप में प्रचारित किया तथा पर्यटकों को अनेक सामाजिक घटनाओं, धार्मिक स्थानों तथा उनके व्यक्तिगत हित से रूबरू करवाया। (ब्राउनस्टीन 2006और 2008) वर्तमान काल में पर्यटन उद्योग भारत में स्थापित सेवा उद्योग है, जिससे 25 से 35%पर्यटकों की आवाजाही से राजस्व की प्राप्ति होती है। वर्ष 2022 में राजस्थान में 10.83 करोड़ देशी व 39. 66 लाख विदेशी पर्यटक भ्रमण हेतु आये थे। (प्रगति प्रतिवेदन 2022.23 पर्यटन विभाग राजस्थान सरकार)। एक अनुमान के अनुसार 70:से अधिक पर्यटक प्रतिवर्ष आध्यात्मिक स्थलों की यात्रा करते हैं। (कॉक्स एंड किंग)

आध्यात्मिक पर्यटन की अवधारणा

आध्यात्मिक पर्यटन किसी धर्म विशेष से संबंधित ना होकर समस्त धर्मो का समन्वय है। इस पर्यटन में व्यक्ति आत्म शोधन व आत्म परिष्कार के लिए यात्रा करता है। प्रायः यह देखा जाता है कि व्यक्ति या व्यक्तियों को जब कार्य से अवकाश मिलता है, तो वह आध्यात्मिक यात्रा की और निकल पड़ता है। इसी प्रकार की यात्राओं को पर्यटन के रूप में वर्णित किया गया है। शिक्षाविदों ने सीमित संख्या में इस पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों तरह की टिप्पणियां की हैं, और इन्हीं की वजह से यह स्पष्ट है कि दुनिया के कई अलग–अलग क्षेत्रों में कई अलग–अलग कथाएं प्रचलित हैं। आध्यात्मिक पर्यटन व इसके के पर्यटकों के अनुभवों को अभी तक पर्याप्त विद्वानों का ध्यान नहीं मिला है, क्योंकि विभिन्न विद्वानों के विचार भी भिन्न–भिन्न है। पश्चिमी देशों में व्यापक सामाजिक अवधारणाओं को बेहतर तरीके से समझने के लिए आध्यात्मिक पर्यटकों के अनुभव को उपचार, प्रयोगात्मक खोज के रूप में परिभाषित किया गया है। वर्तमान युग में भी जो व्यक्ति धार्मिक यात्राओं की गतिविधियों से संबंधित कार्यों में संलग्न होता है तथा अपने मानसिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक उद्देश्यों व आत्म कल्याण हेतु यात्रा करता है उसे आध्यात्मिक पर्यटक करार दिया जाता है। आध्यात्मिक पर्यटन शब्द भी अकादमिक चर्चाओं में विकसित हो चूका है परन्तु अभी भी इस विषय पर शोध में अपार संभावनाएं हैं। हालांकि यह अध्ययन का एक उभरता हुआ क्षेत्र है। जिसमें अस्थाई सीमाओं को परिभाषित करना और अन्य क्षेत्रीय अध्ययन को सम्मिलित करने से जो निष्कर्ष प्राप्त होंगे वह एक नूतन समीक्षा लाएंगे जिससे पर्यटन को परिभाषित करने में मदद प्राप्त होगीं। यहां विशेष रूप से उल्लेख करते हुए यह कहना होगा कि आध्यात्मिक पर्यटन परंपराओं के भीतर धार्मिक पर्यटन के समान ही प्रतीत होता है। यह पर्यटको को एक धर्म निरपेक्ष रूप से आध्यात्मिक प्रगति तथा कई प्रकार के रूढ़िवाद से अलग होने की इच्छा की ओर ध्यान केंद्रित करता है। यह अति आधुनिक धार्मिक संदर्भ का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें आगंतुक औपचारिक रूप से प्रचलित धार्मिक परंपराओं से जुड़ा हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता। पारंपरिक पर्यटन अध्यन के दृष्टिकोण का उपयोग विश्लेषणात्मक उपकरणों द्वारा नियोजित किया जाता है। हालांकि धार्मिक अध्ययन की पद्धतियां हमें नए दृ ष्टिकोण प्रदान करती है जिसके माध्यम से आध्यात्मिक पर्यटकों के विचारों को देखा व समझा जा सकता है।

दुनिया भर में यात्रियों की संख्या के साथ–साथ आध्यात्मिक पर्यटन का महत्व बढ़ गया है। आध्यात्मिक पर्यटन आध्यात्मिक कारणों से यात्रा करने का अभ्यास है जो कि एक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संसाधनों में वृद्धि को दर्शाता है। यह किसी के शरीर, मन और आत्मा को बढ़ाता है, बनाए रखता है, और विकसित करता है। संक्षेप में आध्यात्मिक पर्यटन को ज्ञान, मनोरंजन और शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से तीर्थ यात्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। आध्यात्मिकता का संबंध किसी एक धर्म से नहीं है। धार्मिक पर्यटन की तुलना में यह आध्यात्मिक यात्रा का लक्ष्य अपने शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाना है जबकि धार्मिक यात्रा का उद्देश्य अपने व्यक्तिगत धार्मिक विचारों के तहत धार्मिक ईस्ट का आशीर्वाद प्राप्त करना होता है। धार्मिक पर्यटन आध्यात्मिक पर्यटन का सिर्फ एक पहलू है। आध्यात्मिक पर्यटन में धार्मिक पर्यटन भी शामिलहै, यह मन, शरीर व आत्मा के सामंजस्य का समर्थन करता है जो धर्म से संबंधित हो भी सकता है और नहीं भी। अनेक शिक्षाविद आध्यात्मिक पर्यटन और धार्मिक पर्यटन शब्दों का परस्पर उपयोग करते है। इस शोध लेख में यह तर्क दिया गया है की धर्म और अध्यात्म के आधारों कि इन विषयों पर लिखे गए लेखों की परीक्षा के आधार पर परीक्षण किया जाता है। धर्म और आध्यात्मिकता को हमेशा विचार और कर्म दोनों में पवित्रता और ईश्वरीय यात्रा के रूप में देखा गया है। पवित्रता के लिए एक व्यक्ति खोज की ऐसी प्रक्रिया को अपनाता है जिसके द्वारा वह अपने जीवन में आवश्यक हर वस्तु को समझने व संरक्षित करने और संशोधित करने का प्रयास करता है। इस प्रवृत्ति के अनुरूप आध्यात्मिक पर्यटन सच्चाई की खोज में एक भौतिक यात्रा है, जो पवित्र है, तथा वह उसकी तलाश के रूप में वर्णित किया गया है। आध्यात्मिक पर्यटन के लाभ अनंत हैं, यह संतोष और आंतरिक मानसिक शांति को बढ़ावा देते हैं। यह व्यक्ति के जीवन को दिशा और महत्व प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र के रीति–रिवाजों और संस्कृतियों का समर्थन करते हैं तथा वहां के स्थानीय लोगों के जन्मजात कौशल, प्रतिभा और क्षमताओं की रक्षा करते हैं। आध्यात्मिक पर्यटन में वृद्धि के साथ स्थानीय समुदायों के प्राकृतिक संसाधनों और सुविधाओं की रक्षा करने में भी वृद्धि हुई है। विदेशी पर्यटक विदेशी मुद्रा लाकर अप्रत्यक्ष रूप से अंतरराष्ट्रीय निवेश को बढ़ावा देते हैं, इससे रोजगार के कई अवसरों का सृजन होता है क्योंकि आध्यात्मिक पर्यटन से जुड़े सेवा उद्यागों को लाभ होता है तथा देश के जीडीपी में वृद्धि होती है।

राजस्थान का आध्यात्मिक पर्यटन और आतिथ्य उद्योग

- **आध्यात्मिक पर्यटन**

राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहां भारत की कई संस्कृतियों और रीति–रिवाजों को आज भी बरकरार रखा गया है। राजस्थान की सड़कों पर टहलते हुए कोई भी स्थानीय संस्कृति को अनुभव कर सकता है। पर्यटक यहाँ विलुप्त होते धार्मिक रीति–रिवाजों को भी देख सकते हैं, जो केवल हमारे पूर्वजों को ही ज्ञात थी। राजस्थानी व्यक्ति धार्मिक रीति–रिवाजों को बेहद गंभीरता से लेते हैं। अधिकांश यात्री न केवल राजस्थान के प्रसिद्ध स्थलों और कला के शानदार कार्यों के बारे में जानने के लिए आते हैं, बल्कि अपनी आत्मा की प्यास को संतुष्ट करने और अपने इष्ट की प्रार्थना करने के लिए भी आते हैं। चाहे मस्जिद हो या मंदिर राजस्थान सभी प्रकार के धार्मिक स्थलों से समृद्ध है। जो मानवीय गरिमा और शांति के लिए प्रति सम्मान की भावना को दर्शाते हैं। राजस्थान के राजाओं ने बहुत से उच्च शिखरों पर उच्च सौंदर्य पूर्ण कई मंदिरों का निर्माण करवाया। इन्होने कई संकटों, आपदाओं और युद्दयों को झेलने के बाद भी अपनी भव्यता को कायम रखा है। जब राजस्थान की यात्रा पर कोई यात्री आता है तो उसे उस समय की याद आती है जो दशकों से सौंदर्य की दृष्टि से अपरिवर्तित रही है।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कोटा, बूंदी, पुष्कर, अजमेर, अलवर, बीकानेर व डूंगरपुर में हिंदू रीति–रिवाजों और संस्कृतियों का विकास हुआ है। विशाल रणकपुर और दिलवाड़ा जैन मंदिर परिसर जैनियों द्वारा विशेष रूप से पवित्र होने के रूप में प्रतिष्ठित हैं, और दुनियाभर के तीर्थयात्री अपनी यात्रा के दौरान अक्सर यहां आते हैं।

राजस्थान सभी आध्यात्मिक संरचनाओं का एक संग्रह है। यहाँ आने वाले यात्रियों को तीर्थ यात्रा के दौरान यहां की लोक संस्कृति व लोक देवताओं के बारे में अवश्य जानना व समझना चाहिए। बुद्ध ने सही कहा था आध्यात्मिक जीवन के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता, यह ठीक वेसा ही है जैसे मोमबत्ती आग के अभाव में नहीं चल सकती। राजस्थान में धर्म और आध्यात्मिकता रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा है, तथा दोनों सामंजस्य पूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं। राजस्थान ऐसे आध्यात्मिक यात्रियों को इस आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह प्रार्थना के उत्साह के साथ–साथ अगरबत्ती और फूलों की सुगंध से भर जाती है। अजमेर दरगाह देश में अब तक का सबसे महत्वपूर्ण मुस्लिम तीर्थ स्थल है। यह दरगाह ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को समर्पित है जिन्हें गरीब नवाज के नाम से भी जाना जाता है। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती एक प्रसिद्ध सूफी संत थे जो 1191 ईस्वी में अजमेर आए थे, और अपने देहांत तक यहां रहे थे। कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित और उस पर किया गया बारीक नक्काशी दार अड़ाई दिन का झोपड़ा 12वीं शताब्दी का है, और दरगाह के प्रवेश द्वार के बाई और एक भीड़ वाली गली में स्थित है। एक शानदार इतिहास सुंदर वास्तुकला शानदार आश्चर्य से भरा हुआ है। इसी के समीप ही तीर्थराज पुष्कर है। तीर्थ राज पुष्कर पुरातन काल से भगवान ब्रह्मा से जुड़ा हुआ, विश्व में एकमात्र मंदिर है। एक पौराणिक कथा के अनुसार ब्रह्मा ने पुष्कर झील बनाने के लिए बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वरम और द्वारिका के चार पवित्र स्थलो का पानी मिलाया था। ब्रह्मा मंदिर में ब्रह्मा जी की मूर्ति की स्थापना आदि शंकराचार्य ने संवत 713 में की थी तथा मंदिर का वर्तमान स्वरूप का निर्माण 1809 में बना था। भारत की गंगा जमुनी तहजीब का राजस्थान किसी भी अन्य राज्य की तुलना में सबसे अच्छा उदाहरण है। यहाँ सम्रग भारतीय संस्कृति का अभ्यास किया जा सकता है तथा इसे देखा व महसूस किया जा सकता है। यहाँ लोक देवताओं जैसे वीर गोगाजी, बाबा रामदेव जी और तेजाजी का भी गहरा सम्मान है। राजस्थान में बहुसंख्यक हिन्दू है इनमे मीणा समूह वैदिक आध्यात्मिक सामाजिक मानदंडो का अनुयाई है। इसके साथ ही राजस्थान में रहने वाले आदिवासियों के बीच भेरव का सम्मान किया जाता है। यहाँ पर राजपूतों द्वारा सूर्य की पूजा की जाती जबकि देवनारायण भगवान गुर्जर जाति के लोगों द्वारा पूजनीय है, जाट समाज द्वारा लोक देवता तेजाजी की पूजा की जाती है, वहीँ पर राजस्थान में दलितों के उत्थान के लिए लोक देवता बाबा रामदेव जी को पूजा जाता है। राजस्थान के सांस्कृतिक विरासत धर्म से काफी प्रभावित रही है, इसके सबसे बड़े ज्वलंत उदाहरण यहाँ के तीज त्यौहार में गणगौर पर्व भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती की याद में असाधरण धूमधाम से मनाए जाते हैं। इसी क्रम में सूफी परम्परा लम्बे समय से राजस्थान की संस्कृति व सभ्यता का एक अभिन्न अंग रही है। जिसमे राज्य के अभिजात वर्ग से लेकर नियमित नागरिक तक शामिल है। राजस्थान में पहली बार धार्मिक उत्सव में कव्वाली का प्रदर्शन करके आत्मिक अनुभूति से अवगत कराया गया था। यहां तक की इसकी कलात्मक अभिव्यक्तिओं की विविधता में राजस्थान की विविध आध्यात्मिक भागीदारी की उपस्थिति नजर आती है।

राजस्थान के उदयपुर जिले में आठवीं शताब्दी में निर्मित भगवान एकलिंग जी की विशाल चार मुख वाली मूर्ति मंदिर परिसर के गर्भ गृह में स्थित है, जिनमें 108 मंदिर है। राजस्थान के बीकानेर के समीप देशनोक में चूहों का मंदिर है जिसे करणी माता का मंदिर कहते हैं। एक किवंदिती के अनुसार यदि कोई अनजाने में भी चूहे को मारता है उसे गंभीर अपशकुन भुगतना पड़ता है। इन पवित्र चूहों को काबा कहा जाता है। सीकर के समीप खाटू श्याम जी का मंदिर है जिसमे घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक को श्याम के नाम से भगवान कृष्ण के रूप में स्थापित किया गया है। राजस्थान के जयपुर में मोती डूंगरी मंदिर सबसे प्रमुख मंदिरों में से एक माना जाता है तथा भगवान गणेश की पूजा के लिए समर्पित माना गया है। इस गणेश प्रतिमा को सन 1761 ईस्वी के आसपास जयपुर लाया गया था। इसी कड़ी में हनुमान उपासक बड़ी संख्या में सालासर बालाजी मंदिर जाते हैं। सम्पूर्ण देवता की शायद एक ही छवि है जिसके मुख पर बाल है। राजस्थानियों ने जैन धर्म के प्रति भी बहुत सम्मान दिखाया है।

राजस्थान में इस्लाम तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। सुन्नी मुस्लिम राजाओं ने अजमेर, नागौर, झुनझुन और फतेहपुर में शासन किया, जो महत्वपूर्ण सूफी केन्द्रों में विकसित हुए। राजस्थान में कई हिंदू राजाओं ने कई मुस्लिम फकीरों और शहीदों के मकबरों का का समर्थन किया है, जैसा कि मंडोर में गुलाम शाह कलंदर के

मकबरे के अंदर देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए मारवाड़ के सात संतों वाला स्थान जो मंदिर और मस्जिद दोनों प्रकार से दिखता है। आज भी प्रचलित है कि मारवाड़ के राठोड़ राजाओं ने वर्षों से इस मस्जिद और मंदिर का बार–बार जीर्णोद्वार कराया। जोधपुर में मेहरानगढ़ किले के पास पहुंचने पर एक छोटा मकबरा ध मंदिर देखा जा सकता है जो आज भी हिंदू और मुसलमान दोनों के द्वारा पूजनीय है। यह मजार जोधपुर के रक्षक और संरक्षक कहे जाने वाले योद्धा के लिए बनाया गया था। यह स्मारक मुस्लिम जनरल भूरे खान के सम्मान में बनाया गया था, जो 19वीं शताब्दी में मारवाड़ और जयपुर के दो हिंदू राज्यों के बीच संघर्ष में मारवाड़ की रक्षा करते हुए शहीद हो गए थे।

राजस्थान में आध्यात्मिकता का असर इतना है कि स्थानीय लोगों की भोजन की आदतों में भी धर्म का बहुत प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए जैन धर्म मानता है की सूर्यास्त से पहले अपना अंतिम भोजन करना चाहिए, ताकि अनजाने में किसी भी कीड़े का सेवन करने से बचा जा सके जो अँधेरे के बाद उड़ रहे हैं। इसके पश्चात इस्लाम के आगमन के साथ मुगल व्यंजनों का उदय हुआ और तब से उन्होंने राजस्थान के पारम्परिक व्यंजनों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजस्थान एक शानदार राज्य है जो की अपने गोरवशाली इतिहास, भव्य वास्तुकला और अपनी गजब की आतिथ्य सत्कार की परम्पराओं के साथ विश्व के 17वें सबसे बड़े मरुस्थल के साथ दुनिया भर के पर्यटकों का स्वागत करता है।

- **राजस्थान का आतिथ्य उद्योग**

"पधारो मारे देश" से आतिथ्य सत्कार करने वाला राजस्थान अब पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नया प्रयास कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में राज्य में आने वाले सैलानियों की संख्या महाराष्ट्र तथा गुजरात राज्य को टक्कर दे रही है। पर्यटन राजस्थान की अर्थव्यवस्था में 20ः से भी अधिक योगदान देता है। भारत आने वाला हर तीसरा विदेशी पर्यटक राजस्थान की यात्रा करता है क्योंकि यह स्वर्ण त्रिभुज का हिस्सा है। पर्यटन को आतिथ्य सत्कार जैसे संबद्ध क्षेत्र की रीड माना जाता है। होटल उद्योग पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य अंग है। राजस्थान में होटल उद्योग की संभावनाएं उज्जवल है। पर्यटन व्यवसाय में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के साथ ही पर्यटकों के लिए रहने व भोजन की व्यवस्था का मुद्दा उभर कर आता है। प्रत्येक पर्यटक जब यात्रा पर निकलता है तो यात्रा के समय काम आने वाली सेवाएं जिसमें आवास,भोजन व यात्रा की संपूर्ण योजना बनाता है। बड़ी संख्या में घरेलू और विदेशी पर्यटकों को समायोजित करने के लिए राज्य भर में होटल उपलब्ध है। होटलों के अलावा राजस्थान सरकार और निजी व्यवसायिओं ने धर्मशाला और गेस्ट हाउस जैसी व्यवस्थाएं भी उपलब्ध करवाई है। राजस्थान में उपलब्ध आवास सुविधाओं में एक सितारा होटल से पांच सितारा होटल शामिल है। इनके अलावा हेरिटेज होटल, मोटेल, धर्मशालाध्सराय,विश्राम घर, राजस्थान राज्य होटल निगम तथा राजस्थान पर्यटन निगम की होटल भी सम्मिलित है।

प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक राजस्थान का राजसी गौरव को देखने और उसका अनुभव करने आते हैं। पर्यटकों की आमद को देखते हुए राज्य सरकार ने वर्ष 2006 में नई होटल नीति की घोषणा की थी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य राजस्थान में होटल आवास की मांग और आपूर्ति के बीच की खाई को पाटना था। इसी क्रम में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2012–13 में पेइंग गेस्ट आवास योजना आरंभ की गई थी। इस योजना मेंउदयपुर,जैसलमेर, जोधपुर, जयपुर,माउंट–आबू,बीकानेर, बूंदी,भरतपुर,अलवर,अजमेर आदि शहरों को सम्मिलित किया गया था। इसके अलावा राज्य में स्थानीय हवेलियों को होटलों में परिवर्तित करने के साथ होटलों की असंरचित श्रेणी के तहत सूची में एक बड़ा इजाफा हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में अधिकतम विकास मध्य–स्तर और विलासिताध्प्रीमियम श्रेणी में हुआ है। जयपुर के अलावा उदयपुर, जोधपुर, पुष्कर,बीकानेर, कोटा और जैसलमेर जैसे शहर इस से लाभान्वित हुए हैं। राज्य में राज्य सरकार तथा निजी व्यवसायी आतिथ्य के सुचारू संचालन में अपनी भूमिका निभाते हैं। राजस्थान में राज्य सरकार ने बजट प्रावधानों के माध्यम से पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया तथा पर्यटन क्षेत्र में बहुत से करो में भी राहत प्रदान की थी, जिसके कारण भी आतिथ्य उद्योग को बढ़ावा मिला।

राज्य में वर्ष 2020 में होटल उद्योग में लगभग 70ः की अधिभोग की दर थी। (पर्यटन विभाग, राजस्थान) भारत के भीतर राज्य घरेलू पर्यटक आगमन (डीटीए) व अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन (आईटीए) की सूची में भी अपना दबदबा रखता है । राजस्थान में लगभग हर बड़े "हॉस्पिटैलिटी ब्रांड" की मौजूदगी है। इसके देशी व विदेशी सभी तरह के ब्रांड शामिल है। एचवीएस की एक रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान आतिथ्य वितरण में 18ः से अधिक सीएजीआर से बढ़ी है। राजस्थान ने गतिशील आर्थिक परिवर्तन देखा है। यह अब दुनिया भर में प्रशंसित "जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल" के अलावा लक्जरी सेगमेंट सहित कई स्टार्ट–आप का घर है, जो इस पर एक सार्थक चर्चा प्रदान करता है।

- **साहित्यिक समीक्षा**

सर्व विदित है कि पर्यटन दशकों पुरानी गतिविधि है। अतीत में हमें देखने को मिलता है कि विश्व के सभी सभ्य राष्ट्रों के साथ पर्यटन का लंबा इतिहास रहा है। हालांकि इसमें अभी और विस्तार की आवश्यकता है। पर्यटन के विभिन्न आयामों में से एक आध्यात्मिक पर्यटन पर अभी भी बहुत कम शोधकर्ताओं ने वैज्ञानिक व व्यवस्थित रूप से जांच की है। डॉ विनय शर्मा,रजत अग्रवाल व प्रमोद चंद्र (2016) ने कहा है कि आध्यात्मिक पर्यटन धार्मिक पर्यटन का ही एक व्यापक रूप है। जिसमे पर्यटक अधिक संतुष्टि का अनुभव करते हैं। शिन्गाई,एन कागुंदा (2016) ने उल्लेख किया है कि वर्तमान में राज्य सरकारें आध्यात्मिक पर्यटन के विकास को लेकर गंभीर दिखाई देती हैं। इसके साथ ही राज्य पर्यटन प्राधिकरण एवं संयुक्त राष्ट्र भी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अपनी जिम्मेदारी समझ रहे हैं। रचिन सूरी व जितेंद्र राव (जून,2014) ने कहा है की व्यवसायिक विपणन नीति, समाजशास्त्र तथा अनुसंधान क्षेत्र में अधिक पर्यटन शब्द हाल ही में विकसित हुआ है। इसका कारण यह है कि इस पर्यटन हेतु बहुत से विदेशी पर्यटक एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करते हैं तथा अपने साथ विदेशी मुद्रा व व्यवसाय के बहुत से नये आयाम भी साथ लेकर आते हैं। मोसमी बनर्जी (2014) ने आध्यात्मिक पर्यटन के लिए कुछ आधारभूत विशेषताओं की पहचान की है। इसमें भी खास बात यह है कि विदेशी पर्यटक आरामदायक यात्रा के लिए नहीं परंतु आत्मिक शांति और साधारण जीवन शैली को जीना चाहते हैं, जिसमे तकनीकी सहायता उनकी यह यात्रा और आसान बनाती है। अनिता मेधकर व डॉ फारुक (2012) ने कहा है कि आध्यात्मिक एक ऐसा उत्पाद है कि वैश्विक आवश्यकता से उभरता है तथा ऐसे लोगों के लिए सही प्रतीत होता है जो कि आध्यात्मिक रूप से विकसित एवं जागरुक हो। हौलमन, शारप्ले और जेपसन (2011),राज व मोरपेठ 2007ः हॉल2006ःटिल्सन (2005) ने कहा है कि आध्यात्मिक और धार्मिक पर्यटन क्षेत्र है जिनमे अभी अनुसंधान की अपार संभावनाएं हैं। जिस पर कार्य करने की आवश्यकता है। हेरनट्री, शारप्ले व जेपसन(2011),स्पेक 2009ःगैरी 2008ःटिमोथी व आल्सन 2006 : ने माना है की कई विद्वान यह मानते पर्यटन के कई क्षेत्रों में से आध्यात्मिक पर्यटन अपनी एक अलग पहचान रखता है। मोहम्मद फारुख (अगस्त, 2011) ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया की एक धार्मिक पर्यटक और भगवान की खोज में निकला तीर्थयात्री आध्यात्मिक पर्यटक है। एक तीर्थ यात्री धार्मिक हो भी सकता है और नहीं भी। यादव(2020) ने कहा है की राजस्थान ने अपनी जनसँख्या, संस्कृति, भोजन, वेशभूषा और कला के रूपों की विवधता के कारण "डिजाइनर राज्य " का उपनाम अर्जित किया है। अक्सर यह दावा किया जाता है की राजस्थान का पर्यटन क्षेत्र 2010 तक लोगों के लिए व्यवसाय के रूप में स्थान बना लेगा। राजस्थान के सकल घरेलु उत्पाद में पर्यटन की लगभग 15 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

- **अनुसंधान पद्धति / क्रियाविधि**

आध्यात्मिक पर्यटन से संबंधित उपलब्ध साहित्य से इस अध्ययन के लिए जानकारी एकत्र की गई है। जिनमे विशेष रूप से आध्यात्मिक पर्यटन की गतिविधियों एवं आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों को केंद्रीय स्थिति में रखते हुए चर्चा की गई है। उपलब्ध साहित्यिक समीक्षा और देश–विदेश से आने वाले पर्यटकों की राय एवं विचार किसी भी पर्यटन स्थल के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। मुख्यतः यह शोध द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। यह आंकड़े पत्रिकाओं, पुस्तकों, समाचार–पत्रों, इंटरनेट, विज्ञापन के साथ दृसाथ प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन से जुड़े व्यक्तियों के विचारों पर आधारित है।

- **जाँच –परिणाम**

आध्यात्मिक पर्यटन विषय में उपलब्ध साहित्य से हमें अनेक पहलुओं की जानकारी प्राप्त होती है। आध्यात्मिकता श्रद्धा, आत्म शोधन व आत्म परिष्कार का विषय है, परंतु इसमें कर्मकांड, आस्था व व्यावसायिकता के मुद्दों को व्यवस्थित रूप से और ग्राहक अनुभव के आधार पर बेहतर रूप से प्रबंधित और क्रियान्वित करना चाहिए। आध्यात्मिकता पर्यटन को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से गतिशील और अभिनव दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है, इससे जुड़े विभिन्न हितधारकों के लिए कार्य किया जा सके तथा देशी व विदेशी पर्यटकों को विभिन्न यात्राओं के लिए पुन : प्रेरित किया जा सके। पर्यटकों को अनेको सुविधाएँ जिनमें बेहतर आतिथ्य (होटल,मोटेल, भोजनालय), परिवहन, पार्किंग तथा मंदिरों में देवताओं के दर्शन यह सब कुछ सुनियोजित होना चाहिए तथा इनमें अधिक से अधिक प्रौद्योगिकी तथा अच्छी तरह से सुसज्जित एकल खिड़की व्यवस्था का उपयोग करते हुए निर्बाध ग्राहक सेवा प्रदान की जानी चाहिए।

सारांश व निष्कर्ष

इस अध्ययन ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है कि आध्यात्मिक पर्यटन सामाजिक – आर्थिक विकास में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। इस उभरते हुए क्षेत्र के लिए व्यापक रूप से आधारित आर्थिक विकास नीतियां बनाकर विदेशी मुद्रा निवेश को देश में लाया जा सकता है। स्थानीय समुदायों में बेरोजगारी की दर को कम करने व उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने में आध्यात्मिक पर्यटन से जुड़े विभिन्न क्षेत्र अपनी भूमिका निभा सकते हैं। इससे सम्बंधित विभिन्न नीतियों को विकसित व बेहतर कार्यान्वित करके आध्यात्मिक पर्यटन के संभावित लाभों द्वारा सामाजिक – आर्थिक विकास में वृद्धि हासिल की जा सकती है। उपरोक्त अध्ययन के अनुसार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि राजस्थान को आध्यात्मिक पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की अपार संभावनाएं हैं। पर्यटन का यह रूप आकृति उद्योग के लिए भी सकारात्मक भाव लेकर आया है। आध्यात्मिक स्थलों का सदुपयोग करके उनको राजस्व प्राप्ति व व्यापार के उत्थान के लिए पर्यटन स्थलों को विकसित किया जा सकता है। पर्यटन के इस क्षेत्र के उद्‌भव से विभिन्न अवसरों के नए द्वार खोले हैं जिससे पर्यटन के क्षेत्र से जुड़े अवसर, उद्यमशीलता, बेहतर जीवन स्तर, रोजगार और इससे संबंधित क्षेत्र का समग्र पर्यावरण– सामाजिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

आतिथ्य उद्योग में पर्यटकों के सत्कार मानको और सेवाओं को बेहतर, सुनियोजित व परिष्कृत करना होगा जिससे आगंतुकों को यात्रा का सर्वोत्तम अनुभव प्रदान किया जा सके तथा उन्हें वापसी यात्रा के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। राज्य द्वारा चलाए जा रहे प्रचार–प्रसार कार्यक्रम तथा पर्यटन नीतियों और विपणन पर अभी बहुत कार्य करना बाकी है। आध्यात्मिक पर्यटन में वृद्धि हेतु अधिक से अधिक संख्या में देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करना होगा।

सन्दर्भ

1. Google
2. https://www.tourism.rajsthan.gov.in
3. Emergence of spiritual tourismAnd its impact on hospitality industry with special reference to Uttarakhand region.
4. Shinde, K.A. (2015). Religious tourismAnd religious tolerance: insights from pilgrimage sites in India. *Tourism Review*, *70*(3), 179-196.
5. Shinde, K. (2018). GovernanceAnd management of religious tourism in India. *International Journal of Religious TourismAnd Pilgrimage.*
6. Kim, B., Kim, S., & King, B. (2020). Religious tourism studies: evolution, progress,And future prospects. *Tourism Recreation Research.*

7. Balzani, M. (2020). PilgrimageAnd Politics in the Desert of Rajasthan. In *Contested Landscapes* (pp. 211-224). Routledge.

8. Cort, J. E. (2016). Devotees, familiesAnd tourists: pilgrimsAnd shrines in Rajasthan. In *Raj Rhapsodies: Tourism, HeritageAnd the Seduction of History*.

9. Parveen, W. (2018). *Tourism Marketing in Rajasthan:A case Study of Rajasthan Tourism Development Corporation* (Doctoral dissertation, University of Kota).

10. Rashid,A. G. (2018). Religious tourism–a review of the literature. *Journal of Hospitality*

11. *and Tourism Insights*.

12. Poria, Y., &Ashworth, G. (2009). Heritage Tourism-Current Resource for Conflict.Annals of Tourism Research.

13. Medhekar,A., & Haq, F. (2012). Development of spiritual tourism circuits: The case of India. *GSTF Journal on Business Review.*

14. Mukherjee, S., Bhattacharjee, S., & Singha, S. (2020). Religious to Spiritual Tourism-An Era of Paradigm Shift in India.

15. Sharpley, R. (2009). Tourism, religion And spirituality. *The Sage handbook of tourism studies.*

16. Singh, S. (2011). Religious tourism, spiritualityAnd peace. *Religious tourism inAsiaAnd the pacific.*

17. Haq, M., & Jackson,A. (2006). The recognition of marketing of spiritual tourismAsA significant newArea in leisure travel.

18. Timothy, D. J., & Conover, P. J. (2006). Nature religion, self-spiritualityAnd NewAge tourism. In *Tourism, religionAnd spiritual journeys* (pp. 155-171). Routledge.

❖◆❖